प्रस्तावना : एस. सोमसेगर
कॉर्पोरेट वाइस प्रेज़िडेंट – डेवेलपर डिविज़न, माइक्रोसॉफ़्ट कॉर्पोरेशन

# मैंने आई.आई.टी. में जो नहीं सीखा

## कैंपस से ऑफ़िस तक का सफ़र

'इस पुस्तक की बहुत ज़रूरत थी। इसमें दिए उदाहरण समझने में आसान हैं और प्रसंग यादगार हैं। इस पुस्तक से कई उद्योगों में काम करने वाले युवा पेशेवर लाभान्वित होंगे।'

**आशुतोष वैद्य**, वाइस प्रेज़िडेंट एवं जनरल मैनेजर –
ऐप्लिकेशन ऐंड बिज़नेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग, डेल सर्विसेज़


# राजीव अग्रवाल

अनुवाद : **डॉ. सुधीर दीक्षित**


Hindi translation of
*What I Did Not Learn at IIT - Transitioning from Campus to Workplace*

# पुस्तक की प्रशंसा में

'संसार का वैश्वीकरण बढ़ेगा, जिससे नए अवसर और नई चुनौतियाँ सामने आएँगे। पेशेवर युवाओं को नई योग्यताएँ सीखने और तराशने की ज़रूरत होगी। महत्त्वपूर्ण उनका ज्ञान नहीं होगा, बल्कि यह होगा कि वे अपने ज्ञान का करते क्या हैं। यह पुस्तक निश्चित रूप से इंजीनियरों के पेशेवर करियर में लाभकारी होगी। इसे पढ़ना आसान है और यह किसी व्यक्ति को वास्तविक संसार का सामना करने में मदद करती है।'

**सोम मित्तल, भूतपूर्व प्रेज़िडेंट, नैस्कॉम**

*'मैंने आई.आई.टी. में जो नहीं सीखा* ज्ञान और परिपूर्णता की राजीव की सतत खोज का उत्कृष्ट गहन चिंतन है। हममें से कुछ लोगों को राजीव की विनम्रता और ज्ञान की पिपासा से परिचित होने का सौभाग्य मिला है तथा इस पुस्तक में उनके ये दोनों ही गुण स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित होते हैं। यह देखना आश्चर्यजनक है कि राजीव ने अपने बरसों लंबे सफल करियर में जो सीखा है, उसे वे कितनी ख़ूबी से अगली पीढ़ी के उन लोगों को पहुँचा रहे हैं, जो नौकरी के संसार में दाख़िल हो रहे हैं - भले ही वे कोई भी मार्ग चुन रहे हों। यह पुस्तक असाधारण है, पढ़ने में आसान है और जीवन की किसी भी अवस्था वाले ऐसे व्यक्ति के लिए है, जो कुछ सीखना चाहता है और अपनी पूरी संभावना को साकार करना चाहता है।'

**एस. सॉमसेगर, कॉर्पोरेट वाइस प्रेज़िडेंट,**
**द डेवेलपर डिविज़न, माइक्रोसॉफ़्ट कॉर्पोरेशन**

'हम इस पुस्तक की प्रतियाँ अपने इंजीनियर प्रशिक्षणार्थियों को दे रहे हैं, जो इसी साल विश्वविद्यालय के कैंपस से हमारे यहाँ काम करने आए हैं। बहुत ही व्यावहारिक विचार। हर पेशेवर को इन्हें अपने दैनिक जीवन में अपनाना चाहिए!'

**सुनील गोयल, चीफ़ ऑपरेटिंग ऑफ़िसर, सोप्रा ग्रुप इंडिया**

'एक उत्कृष्ट वृत्तांत, जिसे सरल भाषा में लिखा गया है। मैं एक ही बैठक में पूरी पुस्तक पढ़ गया। इससे हमें "कैंपस नियुक्तियों" के भीतर छिपी योग्यता को ऑफ़िस में उजागर करने का अवसर मिलता है। इसे पढ़ना हर उस युवा पेशेवर के लिए अनिवार्य है, जो सही तरीक़े से सफल होना चाहता है!'

**श्रीनिवास शास्त्री, वाइस प्रेज़िडेंट, एच.आर., बिरलासॉफ़्ट**

'पढ़ने में आसान है और जल्दी पढ़ी जा सकती है। जाँचसूचियों ने मेरा दिल जीत लिया। सच कहूँ तो इस पुस्तक को पढ़कर मैंने कई बातें सीखीं, जिन्हें मैं अपने कामकाज/जीवन में उतारना चाहता हूँ। मेरी ख़्वाहिश है कि मैं अपनी पूरी टीम को यह पुस्तक पढ़ने को दूँ। बेहतरीन पुस्तक!'

**शिवा शेनॉय, सह-संस्थापक और वाइस-प्रेज़िडेंट, क्लेम्स-एक्स-चेंज**

'इस पुस्तक में दिए उदाहरण और विचार लगभग सभी उद्योगों में लागू हो सकते हैं। पिछले 25 सालों से मैंने राजीव को उनका अभ्यास

करके करियर में आगे बढ़ते देखा है। मुझे विश्वास है कि ये विचार कई नए स्नातकों के करियर को आगे बढ़ाने में भी मदद करेंगे। मैं इस पुस्तक की दिल से अनुशंसा करता हूँ।'

**ओ.पी. गोयल, पूर्णकालिक डायरेक्टर, जे.के. पेपर लिमिटेड**

'विप्रो, सिस्को, ई.एम.सी. और अब महिन्द्रा सत्यम जैसी वैश्विक कंपनियों में व्यवसायों का नेतृत्व करते हुए मैंने कई सफल लोगों के साथ काम किया है। इस पुस्तक में बताई गईं व्यक्तिगत सफलता की आदतें मुझे बहुत कारगर लगती हैं। जो भी इंसान अपने करियर में तरक्की करना चाहता है, उसके लिए इसे पढ़ना अनिवार्य है।'

**मनोज चुग, ग्लोबल हेड -**
**बिज़नेस डेवेलपमेंट, ऐंटरप्राइज़ डिविज़न, टैक महिन्द्रा**

'यह प्रामाणिक और प्रेरक पुस्तक कई युवा स्नातकों के करियर को आगे बढ़ाने में मदद करेगी। कई प्रशिक्षण विभाग इस पुस्तक का इस्तेमाल अपने प्रशिक्षण कार्यक्रम में करेंगे। नए स्नातकों के लिए इसे पढ़ना अनिवार्य है, यदि वे सफल आदतें डालना चाहते हैं और कॉलेज के बाद के जीवन को लेकर सही दृष्टिकोण हासिल करना चाहते हैं।'

**अंकुर प्रकाश, वाइस प्रेज़िडेंट और चीफ़ ऑपरेटिंग ऑफ़िसर -**
**टी.सी.एस., लैटिन अमेरिका**

'अति-क्षमता से परेशान कई उद्योगों के साथ भारतीय कंपनियों के पास अब भी आई.टी. सेवाओं के क्षेत्र में नेतृत्व करने का अवसर है। टीम सदस्यों की प्रभावकारिता को बढ़ाना भी किसी कंपनी का विकास करने का एक तरीक़ा है। प्रगतिशील कंपनी के रूप में एम.ए.क्यू. सॉफ़्टवेअर इस पुस्तक में बताई कुछ प्रमुख विकास तकनीकों पर चली है। मैं उद्योग के लीडरों से इस पुस्तक की बहुत अनुशंसा करता हूँ कि वे अपना कारोबार बढ़ाने के लिए इसे अपनी टीमों तक पहुँचाएँ।'

**वर्न हार्निश, गज़ेल्स, इनकॉर्पोरेटिड के संस्थापक और सी.ई.ओ.**
**तथा *मास्टरिंग द रॉकफ़ेलर* हैबिट्स के लेखक**

'यह एक बेहतरीन पुस्तक है; ज़मीन से जुड़ी है, सरल भाषा में है और जटिल मुद्दों को स्पष्ट करने के लिए सहज बोध का इस्तेमाल करती है। उम्मीद है कि यह पुस्तक बहुत-से इंजीनियरों और अन्य लोगों के लिए आत्म-अवलोकन का साधन बनेगी और ख़ुद को बेहतर बनाने के लिए जाँचसूची के रूप में इस्तेमाल होगी।'

**अर्जुन मल्होत्रा, सह-संस्थापक,**
**एच.सी.एल. टेक्नोलॉजीज़ और हेडस्ट्रॉन्ग**

# मैंने आई.आई.टी. में जो नहीं सीखा

# मैंने आई.आई.टी. में जो नहीं सीखा

## कैंपस से ऑफ़िस तक का सफ़र

राजीव अग्रवाल

अनुवाद : डॉ. सुधीर दीक्षित

रैण्डम हाउस इण्डिया

रैण्डम हाउस इंडिया द्वारा 2013 में प्रकाशित

कॉपीराइट © राजीव अग्रवाल 2013
अनुवाद © डॉ॰ सुधीर दीक्षित

प्रकाशक:
रैण्डम हाउस पब्लिशर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड
सातवाँ तल, इनफिनिटी टावर-सी, डीएलएफ साइबर सिटी,
गुड़गाँव-122 002, हरियाणा

रैण्डम हाउस ग्रूप लिमिटेड
20 वॉक्सहॉल ब्रिज रोड
लंदन एस डब्ल्यू 1 वी 2 एस ए, यूनाइटेड किंगडम

इस ई-बुक का कॉपीराइट सुरक्षित है और प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना तथा क्रय किए जाते समय लागू होने वाले नियम व शर्तों के आधार पर, अथवा कॉपीराइट कानून के अंतर्गत लागू होने वाली शर्तों के बिना इस पुस्तक का नकल, पुन: प्रकाशन, हस्तांतरण, वितरण, किराए/पट्टे हेतु, लाइसेंस अथवा सामूहिक प्रदर्शन के लिए उपयोग नहीं किया जा सकेगा। इस पुस्तक की सामग्री के अनधिकृत वितरण अथवा प्रयोग को लेखक एवं प्रकाशक के अधिकारों का उल्लंघन माना जाएगा तथा जो इसके जिम्मेदार होंगे उन्हें कानूनी कार्यवाही का सामना करना पड़ सकता है।

**eISBN : 9788184006216**

# विषय-सूची

*प्रस्तावना*

*भूमिका*

1. परिचय
2. कैंपस से ऑफ़िस तक का सफ़र
3. कार्य का प्रबंधन
4. व्यक्तिगत प्रभावकारिता का प्रबंधन करें
5. स्वास्थ्य और धन का प्रबंधन करें
6. अंतिम विचार
7. सात निर्णय
8. आभार

*परिशिष्ट 1 : संपूर्ण जाँच सूची*

*परिशिष्ट 2 : अनुशंसित पुस्तकें*

*परिशिष्ट 3 : ई-मेल और आई.एम*

*परिशिष्ट 4 : सात मिनट के व्यायाम*

*परिशिष्ट 5 : बचत की तुलना के विवरण*

*परिशिष्ट 6 : रहन-सहन एवं पहनावा*

*परिशिष्ट 7 : प्रायः पूछे जाने वाले प्रश्न*

*नोट्स*

*लेखक के बारे में*

*'हम वही बन जाते हैं, जो हम बार-बार करते हैं।*
*यानी उत्कृष्टता कोई क्रिया नहीं, बल्कि आदत है।'*

-ऐरिस्टॉटल

# प्रस्तावना

सफल उद्यमी बनने से पहले राजीव ने कई सालों तक माइक्रोसॉफ़्ट में काम किया था। जब उन्होंने सलाह और राय के लिए इस पुस्तक का शुरुआती ड्राफ़्ट मुझे दिया, तो मेरे दिमाग़ में पहली बात तो यह आई कि राजीव में कितना जोश है, जो वे अपने करियर में सीखी बातों से सबको लाभ पहुँचाना चाहते हैं - ऐसी बातें जो आपको शैक्षणिक संस्थाओं में नहीं सिखाई जातीं - उनके मामले में आई.आई.टी.; मेरे मामले में कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग, गिन्डी, ऐना युनिवर्सिटी।

मैं सोचने लगा कि जब से मैंने माइक्रोसॉफ़्ट में काम शुरू किया है, उसके बाद के 25 सालों के करियर में मैंने कितना कुछ सीखा है - वह कंपनी, जहाँ मैं कॉलेज से निकलते ही नौकरी करने लगा था। यदि मुझे सारांश में अपनी सीखी 3 विशेष बातें बतानी हों, तो वे ये हैं :

(अ) **अपने दिल का अनुसरण करो** - जिस चीज़ के बारे में दिल में जोश हो, वही करो। क्योंकि तभी आप अपना सर्वश्रेष्ठ काम करने के लिए प्रेरित होंगे और तभी आपका वैसा प्रभाव पड़ सकता है, जैसा आप डाल सकते हैं और डालना चाहते हैं।

(ब) **अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करो** - चाहे आपका वर्तमान पद जो भी हो, अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की कोशिश करें, क्योंकि इसकी बदौलत आप उन जगहों पर पहुँच जाएँगे, जिनके आपने कभी सपने भी नहीं देखे होंगे, जिनकी आपने कल्पना भी नहीं की होगी।

(स) **सीखने की निरंतर ललक और रोमांच** - यह आगे बने रहने और अपनी पूर्ण संभावना तक पहुँचने का सर्वश्रेष्ठ तरीक़ा है।

जिस तरह आईना आपका सच्चा बाहरी रूप दर्शाता है, उसी तरह आपके महत्त्वपूर्ण मूल्यों या आपकी सीखी बातों से यह पता चलता है कि आप दूसरों में किस चीज़ को देखते हैं। माइक्रोसॉफ़्ट में हम हर साल वरिष्ठता के अलग-अलग पदों पर हज़ारों नए कर्मचारी नियुक्त करते हैं। सबसे अच्छे और सबसे प्रतिभाशाली लोगों को नियुक्त करना माइक्रोसॉफ़्ट के लिए निहायत ज़रूरी है और यह एक ऐसी चीज़ है, जिसके बारे में मैं जोशीला हूँ। मैंने इस बात पर ग़ौर किया है कि माइक्रोसॉफ़्ट में किसी भी पद पर आसीन जो लोग इन तीन विचारों पर अमल करते हैं, वे ज़्यादा सफल होते हैं। जो लोग अपने दिल का अनुसरण करते हैं, वे अपने काम को लेकर जोशीले और रोमांचित होते हैं, जिससे उनकी टीम, उनके जीवनसाथी और उनके ग्राहक ऊर्जावान बन जाते हैं। जो लोग अपनी भूमिका में अपना सर्वश्रेष्ठ करने की कोशिश करते हैं, वे असाधारण परिणाम देते हैं, जिससे उनकी टीम सफल होती है। और जिन लोगों में सीखने की निरंतर ललक और रोमांच होता है, वे कंपनी जगत में परिवर्तन की तेज़ गति के हिसाब से ढल सकते हैं, ख़ास तौर पर टेक्नोलॉजी उद्योग में। मुझे उन लोगों से मिलकर हमेशा ख़ुशी होती है, जो जोशीले, मेहनती और सीखने को लेकर रोमांचित होते हैं।

माइक्रोसॉफ़्ट में मैं डेवेलपर डिविज़न का प्रभारी हूँ और इसका एक बहुत संतुष्टिदायक हिस्सा पिछले 10 साल से माइक्रोसॉफ़्ट इमैजिन कप का स्पॉन्सर होना है। द इमैजिन कप संसार की सबसे प्रमुख विद्यार्थी प्रौद्योगिकी प्रतिस्पर्धा है। इसने पूरे संसार के 16.5 लाख विद्यार्थियों को उद्योग की सबसे रोमांचक नई प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल सीखने और उनका सृजन करने का अवसर दिया है। जो भी मुझे जानता है, वह इस बात को भी जानता है कि मैं विज्ञान और प्रौद्योगिकी में, ख़ासकर कंप्यूटर विज्ञान में, विद्यार्थियों की रुचि को प्रोत्साहित करने को लेकर कितना जोशीला हूँ।

इमैजिन कप में मैं विद्यार्थियों के साथ काफ़ी समय बिताता हूँ। इससे मुझे सीधे समझ में आता है कि जब विद्यार्थी कैंपस के जीवन से

ऑफ़िस के जीवन में कदम रखते हैं, तो उनके सामने किस तरह की चुनौतियाँ और अवसर होते हैं - जिसके बारे में राजीव ने इस पुस्तक में विस्तार से लिखा है। जब कई विद्यार्थी इमैजिन कप में हिस्सेदारी करते हैं, तभी उन्हें पहली बार पता चलता है कि ऑफ़िस में उन्हें किस तरह के नए अनुभव होंगे - समय का प्रभावकारी उपयोग, टीमवर्क का महत्त्व और परिणामों पर एकाग्रता। पहली बार उन्हें यह समझने का अवसर मिलता है कि उनकी रचनात्मकता, ऊर्जा और विचारों को ऐसे समाधानों में बदला जा सकता है, जो संसार के बहुत-से लोगों की असली समस्याओं को सुलझा सकते हैं। द इमैजिन कप मेरे लिए उन युवाओं के साथ काम करने का बेहतरीन अवसर रहा है, जो जोशीले हैं, सीखने को लेकर रोमांचित हैं, जिज्ञासु हैं, स्व-प्रेरित हैं और जिनमें बेहतरीन कामकाजी आदतें हैं। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क़दम रखने वाले युवाओं में इन गुणों को देखना बहुत ही रोमांचक है। मुझे वाक़ई यक़ीन है कि इन अद्‌भुत विद्यार्थियों के स्वप्न और आकांक्षाएँ ही हैं, जो उनमें से प्रत्येक को निकट भविष्य में भारी सफलता की राह दिखाएँगी तथा प्रौद्योगिकी के अगले चरण तक हमें मार्गदर्शन देंगी। जैसा मैं हमेशा कहता हूँ, आज के विद्यार्थी ही कल के लीडर हैं। वे कंपनियों, राज्यों और देशों की अगली पीढ़ी को चलाएँगे।

इस पुस्तक में राजीव आई.आई.टी. से कारोबारी जगत की सफलता तक पहुँचने के अपने अनुभव बताते हैं। इनमें से कुछ अनुभव विश्वविद्यालय से उद्योग तक पहुँचने की मेरी राह में भी रहे हैं। इस पुस्तक में कई बातें ऐसी हैं, जिन्हें मैं हर साल इमैजिन कप में शामिल विद्यार्थियों को पहली बार अनुभव करते देखता हूँ या माइक्रोसॉफ़्ट में आने वाले नए कर्मचारियों में देखता हूँ। और इन अनुभवों में आपको यही बात विस्तार से बताई जाएगी कि अपने दिल का अनुसरण करो, अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करो और सीखने की निरंतर ललक तथा रोमांच रखो।

नमस्ते!

एस. सॉमसेगर

**कॉर्पोरेट वाइस प्रेज़िडेंट - डेवेलपर डिविज़न**

**माइक्रोसॉफ़्ट कॉर्पोरेशन**

# भूमिका

*'किसी विषय से परिचित होने का सबसे अच्छा*
*तरीक़ा उसके बारे में पुस्तक लिखना है।'*

-बेंजामिन डिज़राइली,
पूर्व ब्रिटिश प्रधानमंत्री और उपन्यासकार

मैंने यह पुस्तक क्यों लिखी?

कुछ साल पहले की बात है। मेरी कंपनी में कॉलेज के नए स्नातक अपनी नौकरी की शुरुआत करने आए थे और मैं उन्हें अपनी कंपनी की जानकारी दे रहा था। उस समय मैं कंपनी की संभावनाओं को लेकर बहुत आशावादी था (तब 2008 का आर्थिक संकट सामने नहीं आया था)। कई नए स्नातक मेरी बात सुनने को लेकर उत्सुक, प्रेरित और रोमांचित थे।

मेरी बात पूरी होने के बाद एक स्नातक ने मुझे घेर लिया और पूछा, 'आपकी सफलता का राज़ क्या है?' मैं कोई जवाब नहीं दे पाया। मैंने इस सवाल के बारे में कभी सोचा ही नहीं था। एम.ए.क्यू. सॉफ़्टवेअर एक नई कंपनी थी, जो एक बहुत प्रतिस्पर्धी बाज़ार में ज़िंदा रहने की कोशिश कर रही थी। हालाँकि हमारी कंपनी सफल थी, लेकिन मेरे पास बड़ी अपेक्षाओं वाली इस भोली स्नातक की बात का कोई तैयार जवाब नहीं था। उसने सचमुच गंभीरता से यह सवाल पूछा था और वह किसी नायाब मंत्र की उम्मीद कर रही थी। समस्या यह थी कि सफलता तो *एक* नुस्ख़े कहीं से अधिक होती है।

जवाब न देना या टाल देना संभव नहीं था, इसलिए मैंने उसे अनुशासन और कठोर मेहनत जैसा नीरस जवाब दे दिया। लेकिन उसका सवाल मुझे खटकता रहा। जवाब देने के लिए कई विचारों को स्पष्ट करने की ज़रूरत थी। दरअसल, उस सवाल का जवाब देने के लिए मुझे एक पूरी पुस्तक लिखनी पड़ी।

मैं नियमित रूप से विद्यार्थियों, शिक्षाविदों और औद्योगिक लीडरों से संवाद करता हूँ। तीनों ही समूह उद्योग की कमियों के लिए एक-दूसरे को दोष देते हैं। विद्यार्थी कहते हैं कि उनके पास योग्य शिक्षकों की कमी है और कॉलेज उन्हें असली ज़िंदगी के काम के लिए तैयार नहीं करता। शिक्षाविद् कहते हैं कि विद्यार्थी पढ़ते नहीं हैं। औद्योगिक लीडर हमारे शिक्षा तंत्र द्वारा तैयार किए गए स्नातकों की गुणवत्ता से निराश होते हैं। यह एक अंतहीन दुष्चक्र है।

बेहतरीन विद्यार्थी अपने शिक्षकों से सीखने के अलावा भी सीखने की क्षमता रखते हैं। बेहतरीन संस्थाएँ संभावनाओं को भाँपती हैं और औसत विद्यार्थियों को श्रेष्ठ स्नातकों में बदल देती हैं। बेहतरीन कंपनियाँ अपने कर्मचारियों की कच्ची क्षमता का उपयोग करने और बेहतरीन परिणाम पाने के लिए बेहतरीन तंत्र बनाती हैं। कोई भी शिक्षक ऊँचे आई.क्यू. वाले विद्यार्थी को जीनियस में बदल सकता है। कोई भी विद्यार्थी बेहतरीन शिक्षकों से ज्ञान हासिल कर सकता है। कोई भी कंपनी आई.आई.टी. स्नातकों को नियुक्त करके ज़्यादा परिणाम हासिल कर सकती है। समस्या यह है कि बेहतरीन शिक्षक, बेहतरीन विद्यार्थी और बेहतरीन कंपनियाँ दुर्लभ हैं। हमारे पास इनमें से एक भी न कभी पर्याप्त रही है, न कभी रहेगी। देश और समाज के रूप में हमारी चुनौती यह है कि हमारे पास जो भी है, हम उसे उसमें बदल दें, जिसे हम चाहते हैं कि वह हमारे पास हो।

मुद्दों का सामना करने के बजाय हम अपना ध्यान विदेशी हाथ की ओर मोड़ लेते हैं या किसी दूसरे की ओर हाथ बढ़ा देते हैं। मुझे उम्मीद है कि मेरे जीवन के उदाहरणों के द्वारा यह पुस्तक लघु रूप से दोषारोपण के खेल को ख़त्म करने में मदद करेगी।

इस पुस्तक का शीर्षक 'आई.आई.टी. ने मुझे यह नहीं सिखाया' इसलिए नहीं रखा गया, क्योंकि सभी विश्वविद्यालय सभी विद्यार्थियों को सीखने के बेहतरीन अवसर देते हैं। नेतृत्व, सैद्धांतिक शिक्षा, खेल जगत, संगीत और कई अन्य क्षेत्रों में विद्यार्थियों के सामने अवसर आते हैं। ज्ञान की नदी सभी शिक्षण संस्थाओं में प्रवाहित हो रही है। यह मुझ पर निर्भर था कि मैं अपने विकास के इन अवसरों को पहचानूँ और इनका लाभ लूँ।

सलाह देने की मेरी आदत नहीं है। ज़्यादातर लोग सलाह की तलाश कर भी नहीं रहे हैं। इसीलिए 'आपको यह करना चाहिए' इस पुस्तक में सिर्फ़ एक ही बार नज़र आएगा - इसी पृष्ठ पर। मैं अपने अनुभव सिर्फ़ इसलिए बता रहा हूँ, ताकि पाठक अपने निष्कर्ष ख़ुद निकाल सकें। मेरे ज़्यादातर अनुभव सॉफ़्टवेअर उद्योग से संबंधित हैं, मगर कुछ विचार शायद दूसरे उद्योगों के भी काम आ सकते हैं।

यह पुस्तक इसलिए अलग है, क्योंकि मैंने इसे एम.ए.क्यू. सॉफ़्टवेअर के सक्रिय सी.ई.ओ. के रूप में लिखा है। यह काफ़ी पहले रिटायर हो चुके इंसान की जीवनी या संस्मरण नहीं है। मैं सोचता हूँ कि लीडरों को अपने अनुभव बताने चाहिए, ताकि वे लोगों के लिए एक आदर्श बन सकें।

'आपने इस पुस्तक पर कितने समय काम किया?' कॉलेज के एक विद्यार्थी ने हाल ही में मुझसे पूछा, जब मैंने उसे इसकी प्रकाशित प्रति दी। गंभीरता से मैंने जवाब दिया, 'जीवन भर।' हालाँकि पुस्तक लिखने में सिर्फ़ तीन महीने का समय लगा, लेकिन इसमें शामिल विचारों को सीखने और उन पर अमल करने में काफ़ी लंबा समय लगा है।

बहुत पहले बेंजामिन फ़्रैंकलिन ने कहा था, 'या तो पढ़ने लायक़ कोई चीज़ लिखो या फिर लिखने लायक़ कोई चीज़ करो।' मुझे उम्मीद

है कि आप दोनों ही काम करेंगे।

# 1
# परिचय

*'तो सुनिश्चित करें कि आप कब क़दम बढ़ाते हैं। सावधानी और बहुत चतुराई से क़दम रखें। याद रखें कि जीवन संतुलन बनाने का नाम है। कभी भी निपुण और चतुर बनना न भूलें। कभी भी अपने दाएँ और बाएँ पैर में भ्रमित न हों। और क्या आप सफल होंगे? हाँ! आप सचमुच होंगे! (98.75 प्रतिशत सफलता की गारंटी है।) बच्चे, तुम पहाड़ हिला दोगे।'*

**-डॉ. स्यूस, ओह, द प्लेसेज़ यू विल गो!**

आई.आई.टी. से निकले हुए मुझे 25 साल हो गए हैं। तब से मैं तीन वैश्विक उद्योगों में सैकड़ों लोगों के साथ काम कर चुका हूँ - अप्लायन्सेस, सॉफ़्टवेअर और परामर्श। मैंने ऐसे कई इंजीनियरों के साथ काम किया है, जिन्होंने तेज़ी से तरक्की की, जबकि बहुतों ने ज़्यादा समय लिया।

इन सभी लोगों के साथ काम करते समय मैंने सफलता के एक आम कारणों पर ग़ौर किया। जो लोग जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल हैं - चाहे यह राजनीति, खेल जगत, कारोबार या शिक्षा जगत हो - उनका आचरण और आदतें ज़्यादातर एक-सी होती हैं।

मैं जब पलटकर अपने जीवन की ओर देखता हूँ, तो मुझे एक बात पता चलती है। जब मुझे अहसास हुआ कि मुझे उस नक़्शे का अनुसरण करना चाहिए, जिसका अनुसरण सफल लोगों ने किया था, तो मेरी यात्रा ज़्यादा आसान बन गई। जब मैंने सफल लोगों के आम गुणों और आरचरण को निरंतरता से अपनाया, तो सफल होना आसान था।

इस पुस्तक में मेरा ज्ञान, मेरे अवलोकन और औद्योगिक अनुभव पर आधारित मेरा गहन चिंतन शामिल है। साथ ही, इसमें कई पेशेवर लोगों के साथ मेरे संवाद का सार भी है। जब मैं इन विषयों पर बात करता हूँ, तो मैं सीखने की मानसिकता रखता हूँ। मुझे उम्मीद है कि अपने करियर में आगे बढ़ते समय इन जानकारियों से आपको लाभ होगा।

## दृष्टिकोण

इनमें से ज़्यादातर विचार सदियों पुराने हैं और शायद सदियों बाद तक क़ायम रहेंगे। कड़ी मेहनत करना और प्रो-ऐक्टिव (सक्रिय) बनना नए विचार नहीं हैं।

अगर हमारा हाल भी अपने माता-पिता की पीढ़ी जैसा रहा, तो हममें से ज़्यादातर लोग 65 साल की उम्र तक रिटायर नहीं हो पाएँगे। इसका मतलब है कि कॉलेज से निकलने के बाद हममें से अधिकतर को 40 साल तक नौकरी करनी होगी।

जब मैं कॉलेज में था, तो मेरा लक्ष्य स्पष्ट था : स्नातक होने के बाद कोई अच्छी नौकरी हासिल करना। ज़्यादातर नियोक्ता इंजीनियरों को शुरुआती स्तर पर नौकरी देना पसंद करते हैं, क्योंकि उनमें तकनीकी ज्ञान होता है। बहरहाल, सफलता हासिल करने के लिए तकनीकी ज्ञान से कुछ ज़्यादा की ज़रूरत होती है। मैं उत्तर प्रदेश के शाहजहाँपुर में पला-बढ़ा था। यह कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था वाला एक छोटा शहर था। वहाँ मैं कई पेशेवर योग्यताएँ नहीं सीख पाया था, जिनकी ज़रूरत ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था में सफल होने के लिए थी।

मेरे पेशेवर विकास को सीमित करने वाले कई घटक शायद ये थे :